UP Board Exam 2023

बिहारीलाल

[जीवन-परिचय एवं कृतियाँ]

रीतिसिद्ध कविवर बिहारीलाल जी का जन्म सन् 1595 ई० में ग्वालियर के पास बसुवा गोबिन्दपुर नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय था। ये माथुर चौबे कहे जाते थे।

इनके विषय में एक उक्ति प्रचलित है —

"जन्म ग्वालियर जानिए, खण्ड बुंदेले बाल।
तरुनाई आई सुघर, मथुरा बासि ससुराल॥"

इनका बचपन बुंदेलखण्ड में बीता तथा युवावस्था में ससुराल में रहने लगे, जो मथुरा में थी।

बिहारी जयपुर के राजा मिर्जा जयसिंह के दरबारी कवि थे। जयसिंह इन्हें एक दोहे पर एक स्वर्णमुद्रा का पुरस्कार देता था। जब जयसिंह अपनी नयी पत्नी के प्रेम में मग्न होकर राज्य की ओर ध्यान नहीं देता है तो बिहारी एक दोहा लिखकर भेजते हैं —

"नहिं परागु नहिं मधुर मधु,
नहिं विकास इहिं काल।
अली कली हीं सों बिंध्यो,
आगे कौन हवाल॥"

यह दोहा पढ़कर जयसिंह की आँखे खुली, वह पुन: राजकाज में लग गया और इन्हे सम्मानित भी किया। बिहारी की मृत्यु सन् 1663 ई० मे होगयी थी।

बिहारी की भाषा ब्रज थी। अलंकार प्रियता एवं गूढ़ार्थ व्यंजना इनके दोहों की प्रमुख विशेषता है।

बिहारीलाल अपनी एक मात्र रचना 'बिहारी सतसई' के लिए हिन्दी-साहित्य-संसार में अमर हो गए। सतसई में 700 से अधिक दोहे भक्ति, नीति एवं शृंगार से सम्बन्धित हैं। सतसई के विषय में उक्ति प्रसिद्ध है—

"सतसैया के दोहरे,
ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगें,
घाव करें गम्भीर।।"

Daily Live Classes
Gyansindhu Coaching Classes
On YouTube